पर्यावरण अवनयन

मुद्दे एवं चुनौतियाँ

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

पर्यावरण अवनयन

मुद्दे एवं चुनौतियाँ

डॉ. योगेन्द्र सिंह

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
एल-9ए, प्रथम तल, गली न. 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली-110094 (भारत)
फोन न. : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

पर्यावरण अवनयन
मुद्दे एवं चुनौतियाँ

संस्करण : 2018
© लेखक
ISBN: 978-93-81416-59-4

इस सम्पादित पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव 'अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस' के द्वारा प्रकाशित।

SAMPLE COPY

विषयवस्तु

प्राक्कथन 9

1. जलवायु परिवर्तन से होने वाले प्रभाव. 13

–डॉ. अरविन्द कुमार सिंह

2. जल संरक्षण एवं उपलब्धता 22

–डॉ. सुस्मिता शर्मा

3. जलवायु परिवर्तन और इसके प्रभाव. 30

–डॉ. रंजना सक्सेना

4. जनपद कुशीनगर में शैक्षिक सुविधाओं का भौगोलिक अध्ययन 41

–डॉ. एम.एस. चौहान एवं संतोष कुमार सिंह

5. समन्वित ग्रामीण विकास-जैसलमेर जिले का एक भौगोलिक अध्ययन . . 52

–नवीन सिंह एवं शुभ सेजवार

6. पर्यावरण में स्वच्छ भारत मिशन की भूमिका का विश्लेषण 67

–डॉ. भुवनेश कुमारी

7. युद्ध और पर्यावरण–एक विश्लेषण. 72

–डॉ. रूबी सिद्दीकी

8. भारत की नदी जोड़ो परियोजना. 82

–डॉ. यशस्वी मिश्रा

SAMPLE

9. वायु प्रदूषण का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव. 88
–डॉ. सुनीता सिंह एवं डॉ. मनवीर सिंह

10. पर्यावरणीय दुर्दशा : कारण एवं परिणाम 97
–अर्चना तिवारी

11. असंतुलित विकास का मानव जीवन पर प्रभाव. 105
–रेनू राजपूत

12. जैव-विविधता : संरक्षण एवं संधारणीय विकास. 111
–अरुण कुमार मिश्रा

13. श्रमण संस्कृति में पारिस्थितिकी दर्शन के तत्व 118
–डॉ. अनिलेश कुमार सिंह

14. भारतीय लोक जीवन में पर्यावरणीय चिन्तन. 123
–अजय कुमार एवं विन्ध्येश्वरी प्रसाद त्रिपाठी

15. आजमगढ़ जनपद में जनसंख्या वृद्धि एवं कृषि भूमि उपयोग से उत्पन्न पर्यावरणीय अवनयन की समस्या और जनसंख्या पर्यावरण संतुलन हेत सुझाव एवं नियोजन. 131
–डॉ. एस.के. शर्मा एवं राजनरायन प्रजापति

16. ग्रामीण व्यावसायिक संरचना का एक प्रतीकात्मक अध्ययन जनपद कुशीनगर के संदर्भ में 146
–डॉ. एम.एस. चौहान एवं सन्तोष कुमार सिंह

17. स्वच्छ भारत अभियान : सम्भावनाएं एवं चुनौतियाँ. 155
–डॉ. रमा अरोरा एवं मनप्रीत कौर

18. पर्यावरण संरक्षण में सौर ऊर्जा की भूमिका. 178
*–ब्रजेश कुमार तेजस्वी**

19. वायु प्रदूषण की बढ़ती चुनौतियाँ एवं मानव सुरक्षा पर प्रभाव. 186
–डॉ. यशार्थ गौतम

SAMPLE

20. जनसंख्या विकास एवं स्थानिक-वितरण प्रतिरूप : रामपुर जनपद के विशेष संदर्भ में 191
–अक्षय कुमार शुक्ला

21. भीड़ के दैहिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रभाव. 199
–डॉ. सुनील चौधरी

22. गाजियाबाद जनपद में कृषि विकास एवं सामाजिक-आर्थिक असमानता : एक भौगोलिक अध्ययन. 210
–अस्मिता पाठक

23. बरेली महानगर की मलिन बस्तियों का सामाजिक-आर्थिक एवं पोषण स्तर का भौगोलिक अध्ययन 218
–चन्दन कुमार

24. जल संरक्षण और जल की उपलब्धता. 226
–डॉ. मोहम्मद नाज़िम

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

प्राक्कथन

पर्यावरण अवनयन एक विश्वव्यापी गम्भीर चिंता एंव चिंतन का विषय है। सम्पूर्ण विश्व में विभिन्न सम्मेलनों एवं संगोष्ठियों के माध्यम से इस पर चर्चा हो रही है, जिसका सार यह है कि यदि हमने अभी भी पर्यावरण के संरक्षण पर ध्यान नहीं दिया तो सम्पूर्ण सौरमण्डल में जीवन के आवश्यक दशायें उपलब्ध कराने वाले एक मात्र ग्रह पृथ्वी पर जीवन असम्भव हो जायेगा। औद्योगिक क्रान्ति के पश्चात् विकास की अंधी दौड़ से विनाश का भी आगाज हुआ। प्रौद्योगिकी से लैश तकनीकी मानव ने संसाधनों का अन्धाधुन्ध दोहन प्रारम्भ किया। विभिन्न देशों में संसाधनों का अतिशय दोहन तथा आधुनिकता के लिय प्राकृतिक पर्यावरणीय तत्वों पर मानव जाति का दबाव पर्यावरण को अत्यधिक क्षति पहुंचा रहा है, परिणामस्वरूप पृथ्वी पर उपलब्ध सीमित संसाधन न केवल विनाश के कगार पर पहुंच चुके है बल्कि पर्यावरण की गुणवत्ता का तेजी ह्रास हो रहा है। उपभोगक्तावाद, औद्योगीकरण, नगरीकरण रसायनीकरण, निर्वनीकरण, जनसंख्या विस्फोट एवं विलासितावाद आदि ने पर्यावरण के अवनयन में अहम भूमिका निभाई है जिसका परिणाम पर्यावरण क्षरण के रूप में आज हम सबके समक्ष है।

पर्यावरण अवनयन : मुद्दे एवं चुनौतियाँ विषय पर आधारित यह सम्पादकीय पुस्तक विभिन्न लेखों का संकलन है। पुस्तक की भाषा सरल, सहज एवं बोद्धगम्य है, जिसमें नवीनतम आंकड़ों को समाविष्ट करने का प्रयास किया गया है। निश्चित रूप से यह पुस्तक पाठकों, शोधार्थियों एवं छात्र/छात्राओं के लिए ज्ञानवर्धक एंव उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

SAMPLE

पुस्तक की रचना में उन समस्त विद्वानों एवं शोधार्थियों के प्रति कृतज्ञता जिनके सहयोग से यह पुस्तक मूर्त रूप में आ सकी। साथ ही विधिवेत्ता एवं उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, इलाहाबाद के सदस्य प्रो. (डॉ.) हरबंश दीक्षित, अधीनस्थ सेवा चयन आयोग की सदस्या डॉ. सीमा रानी, प्राचार्य डॉ. एस.डी. द्विवेदी एवं मेरे विभाग के समस्त सहयोगियों का हार्दिक आभार जिनके सुझाव मेरा मार्ग दर्शन करते रहे हैं।

मैं अपने समस्त परिजनों, शुभचिन्तकों, मित्रों विशेष रूप से पर्यावरण मित्र समिति, मुरादाबाद के सचिव श्री के.के. गुप्ता का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। आप सबके सहयोग एवं शुभकामनाओं से यह कार्य सहज हो सका। पुस्तक के परिमार्जन के रचनात्मक सुझाव का सदैव स्वागत है।

भूगोल विभाग
के.जी.के. कालेज, मुरादाबाद
01.05.2018

डॉ. योगेन्द्र सिंह

नमूना • SAMPLE

1

जलवायु परिवर्तन से होने वाले प्रभाव

*डॉ. अरविन्द कुमार सिंह**

सारांश

हमें गर्मी के मौसम में गर्मी व सर्दी के मौसम में ठण्ड लगती है। ये सब कुछ मौसम में होने वाले बदलाव के कारण होता है। मौसम, किसी भी स्थान की औसत जलवायु होती है जिसे कुछ समयावधि के लिये वहां अनुभव किया जाता है। इस मौसम को तय करने वाले मानकों में वर्षा, सूर्य प्रकाश, हवा, नमी व तापमान प्रमुख हैं। मौसम में बदलाव काफी जल्दी होता है लेकिन जलवायु में बदलाव आने में काफी समय लगता है और इसीलिए ये कम दिखाई देते हैं। इस समय पृथ्वी की जलवायु में परिवर्तन हो रहा है और सभी जीवित प्राणियों ने इस बदलाव के साथ सामंजस्य भी बैठा लिया है परंतु पिछले 150-200 वर्षों में ये जलवायु परिवर्तन इतनी तेजी से हुआ है कि प्राणी व वनस्पति जगत को इस बदलाव के साथ सामंजस्य बैठा पाने में मुश्किल हो रहा है। इस परिवर्तन के लिये एक प्रकार से मानवीय क्रिया-कलाप ही जिम्मेदार है। पृथ्वी का वातावरण जिस तरह से सूर्य की कुछ ऊर्जा को ग्रहण करता है, उसे ग्रीन हाउस इफेक्ट कहते हैं। पृथ्वी के चारों ओर ग्रीन हाउस गैसों की एक परत होती है। इन गैसों में कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रस अ०क्साइड शामिल हैं। ये परत सूर्य की अधिकतर ऊर्जा को सोख लेती है और फिर इसे पृथ्वी की चारों दिशाओं में पहुँचाती है। जो ऊर्जा पृथ्वी की सतह तक पहुँचती है, उसके कारण पृथ्वी की सतह गर्म रहती है। अगर ये सतह नहीं होती तो धरती 30 डिग्री सेल्सियस ज्यादा ठंडी होती। मतलब साफ है कि अगर ग्रीनहाउस गैसें नहीं होतीं तो पृथ्वी पर जीवन नहीं होता।

* असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, वाई.एम.एस. डिग्री कॉलेज, धनौरा, अमरोहा।

TEXT SAMPLE

वैज्ञानिकों का मानना है कि हम लोग उद्योगों और कृषि के जरिए जो गैसे वातावरण में छोड़ रहे हैं (जिसे वैज्ञानिक भाषा में उत्सर्जन कहते हैं), उससे ग्रीन हाउस गैसों की परत मोटी होती जा रही है। ये परत अधिक ऊर्जा सोख रही है और धरती का तापमान बढ़ा रही है। इसे आमतौर पर ग्लोबल वार्मिंग या जलवायु परिवर्तन कहा जाता है।

परिचय

इस समय पृथ्वी की जलवायु में परिवर्तन हो रहा है जिसके परिणास्वरूप प्राणी व वनस्पति जगत का जीवन प्रभावित हो रहा है। जलवायु परिवर्तन के प्रमुख कारण निम्नवत हैं।

जलवायु परिवर्तन के कारण :-

जलवायु परिवर्तन के कारणों को दो भागों में बांटा जा सकता है–प्राकृतिक व मानव निर्मित।

प्राकृतिक कारण :

जलवायु परिवर्तन के लिये अनेक प्राकृतिक कारण जिम्मेदार हैं। इनमें से प्रमुख हैं- महाद्वीपों का खिसकना, ज्वालामुखी, समुद्री तरंगें और धरती का घुमाव।

महाद्वीपों का खिसकना

हम आज जिन महाद्वीपों को देख रहे हैं, वे इस धरा की उत्पत्ति के साथ ही बने थे तथा इन पर समुद्र में तैरते रहने के कारण तथा वायु के प्रवाह के कारण इनका खिसकना निरंतर जारी है। इस प्रकार की हलचल से समुद्र में तरंगें व वायु प्रवाह उत्पन्न होता है। इस प्रकार के बदलावों से जलवायु में परिवर्तन होते हैं। इस प्रकार से महाद्वीपों का खिसकना आज भी जारी है।

ज्वालामुखी

जब भी कोई ज्वालामुखी फूटता है वह काफी मात्रा में सल्फर डाइऑक्साइड, पानी, धूलकण और राख के कणों का वातावरण में उत्सर्जन करता है। भले ही ज्वालामुखी थोड़े दिनों तक ही काम करें लेकिन इस दौरान काफी ज्यादा मात्रा में निकली हुई गैसें, जलवायु को लंबे समय तक प्रभावित कर सकती है। गैस व धूल

RBD • SAMPLE